The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

16. भारतीय समाज सुधार के अग्रवाहक : महात्मा फुले

(200वीं जयंती विशेष)

डॉ. मनोज कुमार गुप्ता
सहायक आचार्य, डॉ. अम्बेडकर पीठ
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू

शोध सार

महात्मा ज्योतिबा फुले की 200वीं जयंती भारतीय सामाजिक सुधारों में उनके अग्रणी योगदानों और समकालीन समाज में उनकी स्थायी प्रासंगिकता का आलोचनात्मक पुनर्मूल्यांकन करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। यह अध्ययन 19वीं सदी के भारत में जाति-पदानुक्रम, लैंगिक असमानता और शैक्षिक बहिष्कार की गहरी जड़ों वाली व्यवस्थाओं को चुनौती देने में फुले की परिवर्तनकारी भूमिका की पड़ताल करता है। औपनिवेशिक सामाजिक सुधार आंदोलनों के व्यापक ढांचे के भीतर स्थित, फुले का कार्य अभिजात वर्ग के नेतृत्त्व वाली सुधारगामी पहलों का प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि उन्होंने पिछड़ों और महिलाओं सहित हाशिए पर पड़े समुदायों के अनुभवों, उनके समक्ष चौनौतियों तथा उनके अधिकारों से जुड़े मुद्दों को केंद्र में रखा।

'गुलामगिरी' (1873) जैसे प्राथमिक ग्रंथों और द्वितीयक विद्वतापूर्ण विश्लेषणों को आधार बनाते हुए यह शोध-पत्र फुले के वैचारिक एवं व्यावहारिक जीवन दर्शन से अन्वेषी संदर्भ की पड़ताल करता है, जो तर्कवादी सोच और समतावादी सिद्धांतों से गहराई से प्रभावित थी। तत्कालीन जातीय पदानुक्रम आधारित वर्चस्व की उनकी आलोचना और सार्वभौमिक शिक्षा की वकालत ने उन्हें भारत में ज्ञान के लोकतंत्रीकरण में एक प्रमुख चिंतक के रूप में स्थापित किया। बालिकाओं और सामाजिक रूप से निम्न जातियों के बच्चों के लिए स्कूलों की स्थापना, 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना, सामाजिक न्याय प्राप्त करने के साधन के रूप में संस्थागत सुधार के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उन्हे अग्रणी समाज सुधारकों में लाकर खड़ा करती है।

सावित्रीबाई का महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य एक समतावादी समाज के उनके व्यापक दृष्टिकोण का पूरक था। विधवाओं के उत्पीड़न, बाल विवाह और जाति-आधारित भेदभाव जैसे मुद्दों को संबोधित करके, फुले ने न केवल मौजूदा सामाजिक मानदंडों की आलोचना की, बल्कि शिक्षा और सामुदायिक लामबंदी पर आधारित व्यावहारिक समाधान भी प्रस्तावित किए। यहाँ बाद के सामाजिक न्याय आंदोलनों पर फुले के दीर्घकालिक प्रभाव का भी मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है, जिसमें बी. आर. अंबेडकर पर उनका प्रभाव और आधुनिक भारत में जाति-विरोधी विमर्श का विकास शामिल है। सशक्तिकरण के एक साधन के रूप में शिक्षा पर उनका जोर और सामाजिक समानता पर उनका आग्रह, समावेश और मानवाधिकारों पर वर्तमान बहसों में आज भी गूंजता है। उनकी द्विशताब्दी के अवसर पर उनके योगदानों का पुनरावलोकन करना, 21वीं सदी में समानता, गरिमा और सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांतों के साथ पुनः जुड़ने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

शब्द कुंजी- समाज सुधार, महात्मा फुले, डॉ. अम्बेडकर, शिक्षा, सशक्तिकरण, भारतीय

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

प्रस्तावना

19वीं सदी के सबसे शुरुआती और सबसे क्रांतिकारी समाज सुधारकों में से एक माने जाने वाले फुले ने जातीय पदानुक्रम, लैंगिक असमानता और ज्ञान तक सीमित पहुँच की बाधक उन व्यवस्थाओं को चुनौती दी, जिन्होंने पारंपरिक और औपनिवेशिक, दोनों ही ढाँचों के तहत भारतीय समाज को दो ध्रुवों में बांटने का प्रयास किया था। उन्होंने न केवल सामाजिक स्तरीकरण की वैधता पर सवाल उठाया, बल्कि समानता, न्याय और मानवीय गरिमा को प्राप्त करने के लिए शिक्षा को एक परिवर्तनकारी साधन के रूप में भी प्रस्तुत किया।

जिस सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ में फुले का उदय हुआ, वह कठोर जातिगत विभाजनों और हाशिए पर पड़े समुदायों—विशेष रूप से कथित अछूत, पिछड़ों और महिलाओं—को औपचारिक शिक्षा से व्यवस्थित रूप से बाहर रखने की प्रवृत्ति से चिह्नित था। फुले ने यह पहचान लिया था कि शिक्षा से वंचित रखना ही दमनकारी ढाँचों को बनाए रखने का मुख्य आधार था। परिणामस्वरूप, उन्होंने शिक्षा की अवधारणा को केवल साक्षरता या अकादमिक निर्देश के रूप में नहीं, बल्कि बौद्धिक मुक्ति और सामाजिक सशक्तिकरण के एक साधन के रूप में प्रस्तुत किया। इस प्रकार, उनके प्रयास अभिजात वर्ग के सुधारवादी विमर्श से हटकर सामाजिक परिवर्तन की एक अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक दृष्टि की ओर एक युगांतकारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करते हैं (ओ'हैनलोन, 1985)।

फुले के सुधारवादी एजेंडे का एक निर्णायक पहलू सार्वभौमिक और सुलभ शिक्षा पर उनका ज़ोर था। 1848 में, अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले के साथ मिलकर, उन्होंने पुणे में लड़कियों के लिए पहले स्कूलों में से एक की स्थापना की—यह एक ऐसे समाज में एक अभूतपूर्व पहल थी जहाँ महिलाओं की शिक्षा को व्यापक रूप से हतोत्साहित किया जाता था और अक्सर उसे कलंक माना जाता था। इस प्रयास ने लिंग-आधारित शैक्षिक बाधाओं को तोड़ने के उद्देश्य से चलाए गए एक व्यापक आंदोलन की शुरुआत को चिह्नित किया। इसके अलावा, फुले ने अपनी शैक्षिक पहलों का विस्तार निचली जाति के समुदायों तक भी किया, और ऐसे स्कूलों की स्थापना की जिन्होंने पारंपरिक व्यवस्था में अंतर्निहित जाति-आधारित बहिष्कार को सीधे तौर पर चुनौती दी। ये हस्तक्षेप उनके इस विश्वास को रेखांकित करते हैं कि शिक्षा ही आलोचनात्मक चेतना जगाने और हाशिए पर पड़े समूहों को अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने में सक्षम बनाने का सबसे प्रभावी साधन थी (ओमवेट, 1976)।

शिक्षा के प्रति फुले का दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तन की उनकी व्यापक दृष्टि से आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ था। उनके महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'गुलामगिरी' (1873) ने जातिगत ऊँच-नीच की शोषणकारी प्रकृति को उजागर किया और भारत में जातिगत उत्पीड़न तथा दुनिया के अन्य हिस्सों में नस्लीय दासता के बीच समानताएँ दर्शाईं। अपनी ऐसी रचनाओं के माध्यम से, फुले ने न केवल शोषित समुदायों की शिकायतों को स्वर दिया, बल्कि प्रतिरोध और सामाजिक पुनर्गठन के लिए एक रूपरेखा भी प्रदान की।

1873 में, फुले ने 'सत्यशोधक समाज' (सत्य की खोज करने वालों का समाज) की स्थापना करके अपने सुधारवादी आदर्शों को संस्थागत रूप दिया। इस संगठन का उद्देश्य सामाजिक समानता को बढ़ावा देना, जाति-आधारित भेदभाव को नकारना और धार्मिक तथा सामाजिक रीति-रिवाजों की आलोचनात्मक जाँच को प्रोत्साहित करना था। इस समाज ने हाशिए पर पड़े समुदायों को लामबंद करने और गरिमा तथा आत्म-सम्मान पर केंद्रित एक सामूहिक चेतना को बढ़ावा देने में एक निर्णायक भूमिका निभाई। महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने विधवा पुनर्विवाह

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

जैसी सामाजिक प्रथाओं की वकालत भी की और बाल विवाह का विरोध किया, जिससे सामाजिक असमानता के कई आयामों का समाधान हुआ।

फुले के विचारों में शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के बीच का आपसी संबंध, उनकी चिरस्थायी प्रासंगिकता को समझने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। फुले के लिए, शिक्षा कोई अलग-थलग क्षेत्र नहीं थी, बल्कि यह व्यापक सामाजिक परिवर्तन का एक उत्प्रेरक थी। व्यक्तियों को ज्ञान और आलोचनात्मक सोच के कौशल से समृद्ध करके, शिक्षा ने उन्हें दमनकारी मानदंडों को चुनौती देने और एक अधिक समतावादी समाज के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम बनाया। यह दृष्टिकोण सामाजिक परिवर्तन के आधुनिक सिद्धांतों के अनुरूप है, जो सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देने, असमानता को कम करने और लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने में शिक्षा की भूमिका पर जोर देते हैं (कीर, 1974)।

महात्मा फुले की विरासत का बाद की पीढ़ियों के सामाजिक सुधारकों और विचारकों पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिनमें सबसे प्रमुख नाम डॉ. बी. आर. अंबेडकर का आता है, जिन्होंने 20वीं सदी में जाति, शिक्षा और सामाजिक न्याय पर विमर्श को और आगे बढ़ाया। शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में महात्मा ज्योतिबा फुले का योगदान भारतीय सामाजिक सुधार के इतिहास में एक युगांतरकारी अध्याय का प्रतिनिधित्व करता है। शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने और व्यवस्थागत असमानताओं को चुनौती देने के उनके अग्रणी प्रयासों ने एक अधिक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की नींव रखी। आज जब हम उनकी 200वीं जयंती माना रहे हैं तो यह अनिवार्य हो जाता है कि हम उनके विचारों को फिर से देखें और उन पर आलोचनात्मक ढंग से विचार करें। विशेष रूप से शिक्षा तक पहुँच, सामाजिक असमानता और मानवाधिकारों से संबंधित मौजूदा चुनौतियों के संदर्भ शामिल हैं। फुले का दृष्टिकोण आधुनिक विश्व में सामाजिक परिवर्तन की दिशा में किए जा रहे प्रयासों के लिए एक ऐतिहासिक आधार और प्रेरणा का स्रोत है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

महात्मा ज्योतिबा फुले जिस समय काल में विभिन्न मुद्दों पर कार्य कर रहे थे वह भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत हुए जटिल सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलावों का भी दौर था। यह वह दौर था जब पारंपरिक सामाजिक इकाइयां ऊँच-नीच और पश्चिमी शिक्षा, मिशनरी गतिविधियों और औपनिवेशिक प्रशासनिक सुधारों से प्रभावित आधुनिक विचारों का सह-अस्तित्व था। उस समय भारतीय समाज जाति के आधार पर गहरे तौर पर बँटा हुआ था, जिसमें कठोर विभाजन थे जो संसाधनों, व्यवसायों और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, शिक्षा तक पहुँच को नियंत्रित करते थे। इस युग की एक मुख्य चिंता अथवा चुनौती वंचित समूहों को शिक्षा से वंचित रखना था। शिक्षा सामाजिक नियंत्रण के एक प्रमुख साधन के रूप में काम करती थी, जो जातिगत ऊँच-नीच को और मज़बूत करती थी और असमानता को बनाए रखती थी। निचली जातियों को न केवल औपचारिक शिक्षा से वंचित रखा गया, बल्कि उन्हें सामाजिक कलंक और आर्थिक शोषण का भी शिकार होना पड़ा। महिलाओं को, चाहे वे किसी भी जाति की हों, गंभीर प्रतिबंधों का सामना करना पड़ रहा था। जिनमें शिक्षा तक सीमित पहुँच, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक आदि शामिल थी। इन परिस्थितियों ने एक गहरे तौर पर असमान समाज का निर्माण किया, जहाँ आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए सामाजिक गतिशीलता लगभग असंभव थी।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आगमन ने कुछ ऐसे ढाँचागत बदलाव लाए, जिन्होंने परोक्ष रूप से सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया। आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना, मुद्रण संस्कृति का प्रसार, और स्वतंत्रता, समानता तथा तर्कवाद जैसे प्रबोधनकालीन विचारों से परिचय ने पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देना शुरू कर दिया। हालाँकि, औपनिवेशिक नीतियों की पहुँच अक्सर सीमित थी और उन्होंने गहराई से जड़ जमा चुकी जाति व्यवस्था को मौलिक रूप से नहीं बदला। इस दौर में राजा राम मोहन राय जैसे लोगों के नेतृत्व में चले सुधार आंदोलनों का मुख्य ध्यान सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह और धार्मिक सुधार जैसे मुद्दों पर था, लेकिन वे काफी हद तक उच्च जातियों की चिंताओं तक ही सीमित थे। इसके विपरीत, फुले का दृष्टिकोण इस मायने में विशिष्ट था कि उन्होंने निचली जातियों के ढाँचागत उत्पीड़न को सीधे तौर पर संबोधित किया और समावेशी सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

जाति-आधारित भेदभाव के फुले के अपने निजी अनुभवों ने इन ऐतिहासिक परिस्थितियों की उनकी समझ को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। माली जाति के एक परिवार में जन्मे, उन्होंने इस पदानुक्रमित व्यवस्था में निहित सामाजिक अन्याय को अपनी आँखों से देखा। उनके जीवन में एक निर्णायक क्षण तब आया, जब एक ब्राह्मण विवाह समारोह में उनका अपमान किया गया; इस घटना ने जातिगत पूर्वाग्रह की गहराई को उजागर किया और उन्हें इस व्यवस्था को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया। थॉमस पेन की 'राइट्स ऑफ़ मैन' (Rights of Man) जैसे रचना जिसमें समानता और व्यक्तिगत अधिकारों की वकालत की गई थी, से प्रभावित होकर फुले ने धर्म, परंपरा और सामाजिक सत्ता के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करना शुरू किया।

विशेष रूप से महाराष्ट्र जैसे क्षेत्रों में 19वीं सदी के व्यापक बौद्धिक माहौल में जाति-विरोधी और गैर-ब्राह्मण आंदोलनों का उदय भी देखा गया। इन आंदोलनों का उद्देश्य जाति-आधारित विशेषाधिकारों की वैधता पर सवाल उठाना और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए अधिक सामाजिक और शैक्षिक अवसरों की मांग करना था। उनके प्रयासों का परिणाम 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना के रूप में सामने आया, जिसका लक्ष्य सामाजिक समानता को बढ़ावा देना, धार्मिक रूढ़िवादिता को चुनौती देना और शिक्षा तथा सामूहिक संगठन के माध्यम से उत्पीड़ित समूहों को सशक्त बनाना था। महात्मा फुले ने जाति और वर्ग के उत्पीड़न के आपसी जुड़ाव को पहचाना, और इस बात पर ज़ोर दिया कि कैसे आर्थिक शोषण के ज़रिए सामाजिक ऊँच-नीच को और मज़बूत किया गया था। उनकी रचनाओं, जिनमें 'शेतकऱ्याचा आसूड' भी शामिल है, में किसानों की दुर्दशा को उठाया गया और औपनिवेशिक नीतियों के साथ-साथ उत्पीड़न की देसी व्यवस्थाओं, दोनों की आलोचना की गई।

जीवन और दर्शन

महात्मा ज्योतिबा फुले का जीवन बौद्धिक जागरण, सामाजिक प्रतिरोध और परिवर्तनकारी कार्यों की एक प्रेरणादायक गाथा है। 11 अप्रैल, 1827 को महाराष्ट्र के पुणे में 'माली' जाति के एक परिवार में जन्मे फुले का पालन-पोषण ऐसे सामाजिक माहौल में हुआ, जो जाति-आधारित भेदभाव और असमानता से बुरी तरह प्रभावित था। एक वंचित समुदाय से संबंध रखने के बावजूद, उन्हें एक स्कॉटिश मिशनरी स्कूल के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला, जो उनके विश्व-दृष्टिकोण को आकार देने में एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। पश्चिमी शिक्षा के इस

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

संपर्क ने उन्हें समानता, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के विचारों से परिचित कराया, जो भारतीय समाज की कठोर जाति-व्यवस्था के बिल्कुल विपरीत थे।

फुले के बौद्धिक विकास पर 'प्रबोधन काल' (Enlightenment) के विचारकों, विशेष रूप से थॉमस पेन के कार्यों का गहरा प्रभाव पड़ा। पेन द्वारा प्राकृतिक अधिकारों, सामाजिक समानता और पारंपरिक सत्ता की आलोचना पर दिया गया ज़ोर फुले के विचारों से पूरी तरह मेल खाता था। इन विचारों ने उन्हें एक ऐसी तर्कवादी और जाति-विरोधी विचारधारा को विकसित करने में सहायता की, जिसने ब्राह्मणवादी वर्चस्व की वैधता को सिरे से नकार दिया। उनका मानना था कि सामाजिक ऊँच-नीच की श्रेणियाँ मनुष्यों द्वारा ही निर्मित की गई हैं, जिनका उद्देश्य वंचित समुदायों का शोषण और उन पर नियंत्रण स्थापित करना है।

फुले के जीवन पर उनकी पत्नी, सावित्रीबाई फुले का प्रभाव भी उतना ही महत्वपूर्ण था; वे सामाजिक सुधार के उनके अभियान में उनकी सबसे करीबी सहयोगी बन गईं। दोनों ने मिलकर, 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला विद्यालय स्थापित करके, भारत में महिला शिक्षा के आंदोलन की नींव रखी। सावित्रीबाई की सक्रिय भागीदारी ने न केवल फुले के प्रयासों को सुदृढ़ किया, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में महिलाओं की सक्रिय भूमिका और महत्व को भी रेखांकित किया। फुले के जीवन के अनुभवों और उन पर पड़े विभिन्न प्रभावों का परिणाम जाति, धर्म और सामाजिक असमानता की एक व्यापक और गहन आलोचना के रूप में सामने आया। उनकी रचनाएँ, जैसे कि 'गुलामगिरी' (1873), अन्याय के साथ उनके व्यक्तिगत अनुभवों और स्वतंत्रता तथा समानता के वैश्विक विचारों के साथ उनके बौद्धिक जुड़ाव—दोनों को दर्शाती हैं। इसके अलावा, वंचित समुदायों के साथ उनके मेल-जोल ने उनके उत्थान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को और भी गहरा किया, जिसके परिणामस्वरूप कई व्यावहारिक पहलें सामने आईं; जैसे—निचली जातियों के बच्चों के लिए स्कूलों की स्थापना और 'सत्यशोधक समाज' का गठन।

सामाजिक सुधार के प्रमुख योगदान

शिक्षा का प्रचार-प्रसार

शिक्षा का प्रचार-प्रसार महात्मा ज्योतिबा फुले के सुधारवादी दृष्टिकोण का केंद्र बिंदु था। वे इसे सामाजिक परिवर्तन और मुक्ति का सबसे शक्तिशाली साधन मानते थे। 19वीं सदी के भारत में, शिक्षा तक पहुँच पर कथित उच्च-जातीय संभ्रांत लोगों का कड़ा नियंत्रण था, जिसके चलते एक विशेष वर्ग समूह को बौद्धिक विकास से प्रभावी रूप से वंचित रखा गया और तत्कालीन सामाजिक ऊँच-नीच की व्यवस्था को और मज़बूत किया गया। फुले ने यह पहचान लिया था कि शिक्षा से वंचित रखने की यह सुनियोजित व्यवस्था ही वह मुख्य माध्यम थी जिसके द्वारा असमानता और उत्पीड़न को कायम रखा जाता था। परिणामस्वरूप, उन्होंने शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने और इसे जाति या लिंग के भेदभाव से परे सभी के लिए सुलभ बनाने का प्रयास किया।

इस दिशा में एक ऐतिहासिक पहल 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहले स्कूल की स्थापना थी, जिसे उन्होंने अपनी पत्नी, सावित्रीबाई फुले के सहयोग से स्थापित किया था। ऐसे समय में जब स्त्री-शिक्षा का व्यापक विरोध होता था और इसे अनैतिक भी माना जाता था, यह प्रयास अपने आप में एक क्रांतिकारी कदम था। सावित्रीबाई फुले भारत की पहली महिला शिक्षकों में से एक बनीं और इस मिशन को आगे बढ़ाने में उन्होंने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके लिए उन्हे गंभीर सामाजिक विरोध का भी सामना करना पड़ा जिसमें उत्पीड़न और सामाजिक

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

बहिष्कार जैसी स्थितियाँ भी शामिल थीं। अनेक चुनौतियों के बावजूद फुले दंपत्ति अपने उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित रहे। वे शिक्षा को महिलाओं के सशक्तिकरण और पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देने में सक्षम बनाने के लिए एक अनिवार्य साधन मानते थे।

महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के साथ-साथ, फुले ने अपने प्रयासों का विस्तार हाशिए पर पड़े जातिगत समुदायों तक भी किया। उन्होंने विशेष रूप से सामाजिक पदानुक्रम में निम्न जातियों के बच्चों के लिए कई स्कूलों की स्थापना की, और इस प्रकार पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में गहराई से समाई हुई जाति-आधारित बहिष्कार की प्रवृत्ति को सीधे तौर पर चुनौती दी। इन स्कूलों ने न केवल बुनियादी साक्षरता प्रदान की, बल्कि छात्रों में आलोचनात्मक सोच और आत्म-सम्मान की भावना को भी प्रोत्साहित किया। फुले का मानना था कि शिक्षा को सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए और व्यक्तियों को उत्पीड़न का विरोध करने के लिए आवश्यक साधनों से सुसज्जित करना चाहिए। उनकी शैक्षिक पहलों का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू श्रमिकों और किसानों के लिए रात्रि-स्कूलों की स्थापना था। फुले ने समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए लचीले शिक्षण अवसरों की शुरुआत की। यह दृष्टिकोण सामाजिक वास्तविकताओं की उनकी व्यावहारिक समझ और समाज के सबसे अधिक हाशिए पर पड़े वर्गों तक पहुँचने की उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

फुले का शिक्षा-दर्शन केवल कोरी किताबी शिक्षा तक ही सीमित नहीं था; यह सामाजिक समानता और न्याय के उनके व्यापक दृष्टिकोण से गहराई से जुड़ा हुआ था। उन्होंने आधुनिक शैक्षिक सुधारों की ऐसी नींव रखी, जिनका उद्देश्य समानता और सामाजिक न्याय था। उनके ये अग्रणी प्रयास आज भी सार्वभौमिक शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए चल रहे समकालीन आंदोलनों को प्रेरित करते हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी कहीं न कहीं महात्मा फुले के सार्वभौम और सर्वसुलभ शिक्षा दर्शन का प्रभाव दिखाई पड़ता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि महात्मा फुले का जीवन और दर्शन युगानुकूल है।

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण की वकालत महात्मा ज्योतिबा फुले के सुधारवादी कार्यों का एक अहम पहलू थी; उन्होंने लैंगिक असमानता को सामाजिक प्रगति में एक बुनियादी रुकावट माना था। 19वीं सदी के भारत में, महिलाओं को कई तरह के ज़ुल्मों का सामना करना पड़ता था, जिनमें शिक्षा से वंचित रखना, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह पर रोक और सामाजिक बहिष्कार शामिल थे। फुले ने शिक्षा, गरिमा और महिलाओं के लिए समान अधिकारों को बढ़ावा देकर इन गहरी जड़ें जमा चुकी कुरीतियों को चुनौती दी, और इस तरह लैंगिक न्याय को अपने व्यापक सामाजिक सुधार के दृष्टिकोण के केंद्र में रखा।

फुले ने विधवाओं के साथ होने वाले सामाजिक अन्याय को दूर करने के लिए भी सक्रिय रूप से काम किया। उन्होंने गर्भवती विधवाओं के लिए एक आश्रय स्थल स्थापित किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया; इस तरह उन्होंने उन कुरीतियों को चुनौती दी जिनके कारण अक्सर सामाजिक बहिष्कार और यहाँ तक कि कन्या भ्रूण हत्या जैसी घटनाएँ होती थीं। उनके प्रयासों में एक मानवीय दृष्टिकोण झलकता था, जिसका उद्देश्य उन

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

महिलाओं को उनकी गरिमा और स्वायत्तता वापस दिलाना था, जिन्हें सामाजिक मान्यताओं के कारण हाशिए पर धकेल दिया गया था। फुले ने बाल विवाह का भी विरोध किया और इस बात पर ज़ोर दिया कि महिलाओं को अपने जीवन के संबंध में निर्णय लेने की पूरी आज़ादी होनी चाहिए।

निष्कर्षतः देखें तो महात्मा ज्योतिबा फुले का महिला सशक्तिकरण में योगदान न केवल अग्रणी था, बल्कि उसने समाज में एक बड़ा बदलाव भी लाया। पितृसत्तात्मक मान्यताओं को चुनौती देकर और महिलाओं के लिए शिक्षा व गरिमा को बढ़ावा देकर, उन्होंने भविष्य के सुधार आंदोलनों की नींव रखी। डॉ. बी. आर. अंबेडकर जैसे विचारकों पर उनका प्रभाव इस बात को रेखांकित करता है कि एक अधिक समतावादी और समावेशी समाज के निर्माण में उनके विचारों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

विरासत और प्रभाव

फुले की विरासत के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक शिक्षा के लोकतंत्रीकरण में उनकी अग्रणी भूमिका है। लड़कियों और वंचित समुदायों के लिए स्कूल खोलकर, उन्होंने शिक्षा को बहिष्कार के बजाय सशक्तिकरण के एक साधन में बदल दिया। यह दृष्टिकोण आधुनिक भारत में भी गूंजता रहता है, जहाँ शिक्षा को एक मौलिक अधिकार और सामाजिक गतिशीलता के एक प्रमुख चालक के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनके प्रयासों ने समावेशी शिक्षा की दिशा में एक व्यापक आंदोलन शुरू करने में मदद की, जिसने ज्ञान तक पहुँच में असमानताओं को कम करने के उद्देश्य से बाद के सुधारों और नीतियों को प्रभावित किया।

फुले की जाति-विरोधी विचारधारा का भी गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा। वर्चस्ववादी ताकतों के खिलाफ उनकी आलोचना और सामाजिक समानता के लिए उनके आह्वान ने बाद के जातीय पदानुक्रमिकता और उससे उत्पन्न गैर-बराबरी विरोधी आंदोलनों के लिए एक ढाँचा प्रदान किया। विशेष रूप से, उनके विचारों ने डॉ. अंबेडकर को गहराई से प्रभावित किया, जिन्होंने 20वीं सदी में जातिगत भेदभाव के खिलाफ संघर्ष को आगे बढ़ाया। वंचित समुदायों के लिए संवैधानिक अधिकार सुनिश्चित करने के अंबेडकर के प्रयासों को फुले के दृष्टिकोण के विस्तार और संस्थागतकरण के रूप में देखा जा सकता है। भारतीय संविधान में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व पर दिया गया ज़ोर इन साझा आदर्शों की स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाता है।

महात्मा ज्योतिबा फुले की 200वीं जयंती, आज के भारत और दुनिया में उनके विचारों की हमेशा बनी रहने वाली प्रासंगिकता पर सोचने का एक बेहतरीन मौका है। उनके जन्म के दो सदियों बाद भी, जिन सामाजिक असमानताओं को उन्होंने चुनौती दी थी वे आज भी बहुत हद तक गंभीर चिंता का विषय बनी हुई हैं। शिक्षा के संदर्भ में, सभी तक शिक्षा पहुँचाने पर फुले का ज़ोर आज भी बहुत प्रासंगिक है। साक्षरता और स्कूली शिक्षा में काफ़ी प्रगति होने के बावजूद, जाति, लिंग और सामाजिक-आर्थिक आधार पर असमानताएँ आज भी बनी हुई हैं। महात्मा फुले का दर्शन ऐसी परिस्थितियों में पथा प्रदर्शन का कार्य करता है। उनके विचार आधुनिक मानवाधिकारों और सामाजिक न्याय के ढाँचों से भी जुड़ते हैं, जो उनकी प्रासंगिकता को और भी ज़्यादा रेखांकित करते हैं।

अंतर्दृष्टि

महात्मा ज्योतिबा फुले का जीवन और कार्य शिक्षा, सामाजिक सक्रियता और न्याय के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की परिवर्तनकारी शक्ति का एक जीता-जागता प्रमाण है। अपने पूरे जीवनकाल में, फुले ने जाति-व्यवस्था,

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

पितृसत्ता और सामाजिक बहिष्कार की गहरी जड़ों वाली प्रणालियों को चुनौती दी।उन्होंने ऐसे सुधारों की शुरुआत की जिन्होंने हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाया और 19वीं सदी के भारत में सामाजिक दृष्टिकोण को नया आकार दिया।

उल्लेखनीय सामाजिक प्रगति के बावजूद, जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता और शिक्षा तक पहुंच से संबंधित चुनौतियां आज भी बनी हुई हैं, जो फुले के दर्शन की निरंतर प्रासंगिकता को रेखांकित करती हैं। उनके योगदानों का स्मरण करना न केवल एक ऐतिहासिक उपलब्धि की पहचान है, बल्कि एक अधिक समतावादी और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में निरंतर वकालत करने के लिए एक 'आह्वान' भी है। महात्मा ज्योतिबा फुले की 200वीं जयंती इन आदर्शों को फिर से याद करने और उनकी पुष्टि करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।महात्मा ज्योतिबा फुले का जीवन, दर्शन और समाज चिंतन एक ऐसे समाज के निर्माण को जारी रखने की प्रेरणा देता है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति, चाहे उसकी जाति, लिंग या सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, वह गरिमा, स्वतंत्रता तथा समान अवसरों तक पहुँच की उपलब्धता के साथ जीवन जी सके।

संदर्भ सूची

- Keer, D. (1974). *Mahatma Jotirao Phule: Father of social revolution*. Mumbai: Popular Prakashan.
- O'Hanlon, R. (1985). *Caste, conflict and ideology: Mahatma Jotirao Phule and low caste protest in nineteenth-century Western India*. Cambridge: Cambridge University Press.
- Omvedt, G. (1976). *Cultural revolt in a colonial society*. Bombay: Scientific Socialist Education Trust.
- Phule, J. (1873). *Gulamgiri*. Pune: Shree Satyashodhak Samaj Publication.
- Zelliot, E. (1992). *From untouchable to Dalit*: Essays on the Ambedkar movement. New Delhi: Manohar Publishers.

The Asian Thinker